PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Philosophy

Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

युवा वर्ग के नैतिक विकास में स्वामी विवेकानन्द के दर्शन का योगदान

• Shyam Priya • Aradhana Singh • Preeti Singh
• Kumkum Rani

Received : November 2013
Accepted : March 2014
Corresponding Author : Kumkum Rani

Abstract : आज देश में युवाओं की भागीदारी को लेकर बहस छिड़ी हुई है कि हम उन्हें किस तरह विकास की राह में अपना सारथी बना पाएंगे। इस सवाल का जबाब है कि युवा अपना आदर्श ऐसे लोगों को बनाएं जो वाकई जमीनी स्तर पर युवाओं के लिए कर्त्तव्यबद्ध होते हैं। ऐसे ही एक अहम आदर्श हैं- स्वामी विवेकानन्द। स्वामीजी ने अपनी ओजपूर्ण वाणी से सभी को उत्साहित किया मगर युवाओं को उन्होनें ज्यादा प्रोत्साहित किया, क्योंकि उनका मानना था कि-युवा ही हमारा भविष्य है। इसलिए स्वामीजी के जन्मदिन को हम प्रत्येक वर्ष ''युवा दिवस'' के रूप में मनाते हैं। स्वामीजी ने अपने दर्शन में सदैव युवा वर्ग के नैतिक विकास पर बल दिया। परन्तु आज के दौर में कुछ अपवाद को छोड़कर हमारी संपूर्ण युवा पीढ़ी पूरी तरह से भौतिकता में लिप्त हो चुकी है। उनमें जीवन के नैतिक और धार्मिक मूल्यों का अभाव दिखता है जिससे वे अपने सभ्यता और संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। स्वामीजी कहते थे कि उन्नति और प्रगति के लिए अतीत की नींव से जुड़ा होना चाहिए अन्यथा सुदृढ़ भविष्य का निर्माण नहीं हो सकता। इस शोध कार्य में हमने विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों की व्याख्या की है। उनकी इच्छा ऐसे आध्यात्मिक धर्म की स्थापना करना था जो प्रचलित संप्रदायगत धर्मों और सैद्धांतिक वाद-विवादों से ऊपर हो जो मानव समाज को महापुरूषों के निकट ले जाए। वे कहते थे कि प्रत्येक धर्मावलंबियों को धर्म परिवर्तन की शिक्षा न देकर उन्हें लोगों को बेहतर इन्सान बनाने का प्रयास करना चाहिए। इस विषय की व्याख्या करने के लिए हमने तीन तरह की विधियों का भी प्रयोग किया है- वर्णनात्मक विधि, विश्लेणात्मक एवं संश्लेष्णात्मक विधि। इसके अतिरिक्त हमने अपने शोध कार्य में वर्तमान युवा वर्ग के विचारों का भी अध्ययन किया और यह पाया कि युवा पीढ़ी मानवता को आदर्श न मानकर केवल पैसा, पदप्रतिष्ठा ऐश्वर्य को अपने जीवन का आदर्श मानती है। निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि विवेकानंद के विचारानुसार प्रत्येक देश का भविष्य निश्चित रूप से वहाँ की युवा पीढ़ी पर आधारित होता है। अतः जो राष्ट्र अपनी युवाशक्ति का बेहतर और नैतिक इस्तेमाल करेगा वह आगे बढ़ेगा और जो ऐसा नही करेगा, वह अपनी अच्छाईयों विशिष्टताओं के बावजूद उस दौर में पीछे रह जाता है। अतः यह जरूरी है कि हम युवाओं को उचित मार्गदर्शन प्रदान करें जिससे कि उनमें नैतिक मूल्यों का विकास हो क्योंकि आदर्श नेतृत्व ही युवाओं को सही दिशा दिखा सकता है।

Keywords: नैतिकता, कर्त्तव्यबद्धता, संप्रदायगतधर्म, धर्मावलंबी, सुसंस्कृत समाज।

Shyam Priya
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Aradhana Singh
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Preeti Singh
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Kumkum Rani
Asst. Professor, Department of Philosophy,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail : drkumkumranipatna@gmail.com

विषय प्रवेश :

आज के युवकों के लिए स्वामी विवेकानंद जैसे ओजस्वी संन्यासी का जीवन एक आदर्श है। उन्होंने युवाओं के उत्तम चरित्र निर्माण पर बल दिया और उन्हें स्वार्थ, प्रमाद व कायरता की नींद से झकझोर कर जगाया। उन्होनें सदैव अपने व्याख्यानों में आह्वान किया था कि यदि उन्हें दस या बारह नवयुवक मिल जाएँ, जिनकें हृदय में नचिकेता जैसा जीवट हो तो वे इस देश की दिशा व दशा बदल देंगे। स्वामीजी ने सदैव युवाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। परंतु भारतीय समाज विशेषकर युवा-पीढ़ी आज एक बहुत बड़े भटकाव के दौर से गुजर रही है। वैसे तो दुनिया में जहाँ भी बदलाव हुए हैं, उनकी अगुआई तरूणाई ने ही की है। नई पीढ़ी के भरोसे ही देश सुरक्षित है, शिखर पर पहुँच रहा है, परंतु कुछ अपवाद को छोड़कर भारत का यह युवापन श्रीहीन है, साहस विहीन है, तूफान से लड़ने और आसमान में सुराख बनाने का मंसूबा नहीं है। वह भोग का गुलाम है, वो टेक्नोलॉजी की दुनिया में खोए हुए हैं जहाँ की जीवनशैली, मूल्य, संस्कार सब नए हैं, जो उन्हें उनके पुराने और सभ्य संस्कारों से दूर ले जा रहे हैं और चकाचौंध भरी दुनिया का दास बना रहे हैं। अत: आवश्यकता है इन विसंगतियों से निकलने की जो केवल स्वामीजी के आदर्शों के दिशा-निर्देशन से ही संभव है। आज भारत को एक नहीं बल्कि कई विवेकानंद की आवश्यकता है, क्योंकि उनके विचार या आदर्श ही भारत को पुराना गौरव लौटा सकते हैं।

उद्देश्य :

अत: हमारे शोध पत्र का उद्देश्य निम्नलिखित है:

1. युवाओं के नैतिक पतन के कारणों को जानना और उनकी भौतिक एवं सांसरिक मानसिकता में आध्यात्मिकता को भी सम्मिलित करना।
2. विवेकानंद के विचारों और सिद्धांतों का समुचित पालन करना और उनमें राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत कर, उन्हें कर्मशील बनाना।
3. युवाओं में संवेदनशीलता के स्तर को बढ़ाने का प्रयास करना ताकि वे अपने समाज के लोगों के प्रति आदर, स्नेह, सम्मान और सहानुभूति का भाव रख सकें।
4. युवा पीढ़ी में नि:स्वार्थता, निष्काम भावना तथा नीतिपरायणता का विकास करना।
5. युवाओं में वैसे व्यक्तिव का निर्माण करना, जिनमें अनंत शक्ति, अनंत उत्साह, अनंत साहस एवं अनंत धैर्य हो।

विधि :

इस शोध कार्य में हमने तीन प्रकार की विधियों का प्रयोग किया है:-

1. वर्णनात्मक 2. विश्लेषणात्मक 3. संश्लेषणात्मक

सर्वप्रथम वर्णनात्मक विधि के आधार पर स्वामीजी से संबंधित विभिन्न पुस्तकों समाचार पत्रों तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं (विशेषकर युवाओं पर आधारित) द्वारा अध्ययन सामग्री संकलित कर उसकी व्याख्या की गई है। विश्लेषणात्मक विधि द्वारा तथ्यों का विश्लेषण किया गया और अंत में संश्लेषणात्मक विधि के द्वारा स्वामीजी के दर्शन की जो समुचित व्याख्या की गई है, उस पर प्रकाश डाला गया है और एक समन्वयित चित्र प्रस्तुत किया है।

प्रस्तावना :

1. इस शोध कार्य की यह संभावना है कि किसी भी देश का भविष्य निश्चित रूप से वहाँ के युवा पीढ़ी पर आधारित होती है।
2. इस शोध कार्य की यह संभावना है कि इससे युवा वर्ग को आदर्श नागरिक बनने में सहायता मिलेगी, साथ ही जीवन के विभिन्न पदों अवस्थाओं तथा परिस्थितियों में उन्हें अपने कर्त्तव्यों को पूर्णरूपेण निबाहने में पथ-प्रदर्शन प्राप्त होगा।
3. स्वामीजी के उत्थानकारी कार्यों तथा उनकी दी हुई सार्वलौकिक शिक्षाओं से युवाओं के जीवन का सर्वांगीण विकास हो सकेगा। जिससे उनके चरित्र गठन में सहायता मिलेगी।
4. आज के युवा को ऐसे विचारधारा की आवश्यता है ताकि वे विदेश जाकर नहीं बल्कि अपने देश में ही रहकर इसके विकास में अपना योगदान दें।

स्वामीजी के आदर्शों की महत्ता:

स्वामी विवेकानंद के उपदेशों का आधुनिक दुनिया में बड़ा महत्त्व है। विवेकानंद ने कर्म की उपासना को महत्व दिया है और हमें आदमी के अंदर रहने वाले ईश्वर की सेवा

करके मोक्ष प्राप्त करने का उपदेश दिया है। स्वामीजी की इच्छा एक ऐसे आध्यात्मिक धर्म की स्थापना है जो प्रचलित संप्रदायगत धर्मों और सैद्धांतिक वाद-विवादों से ऊपर हो जो मानव समाज का रूपांतरण कर दे और उसे हमारे महापुरूषों के रामराज्य या ईश्वरीय राज्य के आदर्श के निकट ले आए। स्वामीजी के कारण ही भारतवासी इस तथ्य को आत्मसात कर पाएँ कि हमारा धर्म हमारी संस्कृति को विश्व में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। उस समय देश के अनेक नवयुवक जो धर्म परिवर्तन कर ईसाई बन रहे थे, अपनी गलती महसूस की और अपनी संस्कृति की ओर पुनः आकृष्ट हुए ।

स्वामीजी के दार्शनिक विचारों की व्याख्या :

अपने भारत भ्रमण काल के दौरान स्वामीजी ने विभिन्न धर्मों के मूल को समझा और उन्होंने पाया कि सभी धर्मों में उन्हें शाश्वत् एकत्त्व दिख रहा है। यह उन दिनों की बात है, जब स्वामी विवेकानंद अमेरिका में थे। वहाँ कई महत्वपूर्ण जगहों पर उन्होंने व्याख्यान दिए। उनके व्याख्यानों का वहाँ जबर्दस्त असर हुआ। लोग स्वामीजी को सुनने और उनसे धर्म के विषय में अधिक से अधिक जानने को उत्सुक हो उठे। उनके धर्म संबंधी विचारों से प्रभावित होकर एक दिन एक अमेरिकी प्रो० उनके पास पहुंचे। उन्होंने स्वामीजी को प्रणाम कर कहा, ''स्वामीजी, आप मुझे अपने हिंदू धर्म में दीक्षित करने की कृपा करें।'' इस पर स्वामीजी बोले, 'मैं यहाँ धर्म प्रचार के लिए आया हूँ न कि धर्म परिवर्तन के लिए। मैं अमेरिकी धर्म - प्रचारकों को यह संदेश देने आया हूँ कि वे धर्म परिवर्तन के अभियान को बंद कर प्रत्येक धर्म के लोगों को बेहतर इंसान बनाने का प्रयास करें। यही धर्म की सार्थकता है।

वर्तमान युग में युवा वर्ग के विचारों का अध्ययन :

युवा किसी भी समाज और राष्ट्र के कर्णधार हैं। वे उसके भावी निर्माता हैं चाहे वह नेता या शासक के रूप में हो, चाहे डॉक्टर, इन्जीनियर, साहित्यकार व कलाकार के रूप में हों। पर इसके विपरीत अगर वही युवा वर्ग उन परंपरागत विरासतों का वाहक बनने से इन्कार कर दे तो निश्चितः किसी भी राष्ट्र का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। आज का युवा शार्टकट तरीके से लंबी दूरी की दौड़ लगाना चाहता है। जीवन के सारे मूल्यों के ऊपर उसे 'अर्थ' भारी नजर आता है। इसके अलावा समाज में नायकों के बदलते प्रतिमान ने भी युवाओं के भटकाव में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आजकल के युवा फिल्मी परदे और अपराध की दुनिया के नायकों की भाँति रातों-रात उस शोहरत और मंजिल को पा लेना चाहते हैं जो सिर्फ एक 'मृगतृष्णा' है। आज के युवा को सबसे ज्यादा राजनीति ने प्रभावित किया है, पर राजनीति भी आज पदों की दौड़ तक ही सीमित रह गई है। स्वतंत्रता से पूर्व जहां राजनीति देश-प्रेम और कर्तव्य बोध से प्रेरित थी, वहीं स्वंतत्रता के बाद चुनाव लड़ने, अपराधियों को संरक्षण देने और महत्वपूर्ण पद हथियाने तक सीमित रह गयी। आज युवा आंदोलनों के पीछे किन्हीं सार्थक उद्देश्यों का अभाव दिखता है। युवा आज उद्देश्यहीनता और दिशाहीनता से ग्रस्त है, ऐसे में कोई शक नहीं कि यदि समय रहते युवा वर्ग को उचित दिशा नहीं मिली तो राष्ट्र का अहित होने एवं अव्यवस्था फैलने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। अतः युवाओं को भी ध्यान देना होगा कि कहीं उनका उपयोग सिर्फ मोहरों के रूप में न किया जाय।

स्वामीजी के नैतिक विचारों का युवा पर प्रभाव :

आज भी युवा स्वामी जी की जीवनी को पढ़कर ऊर्जा, स्फूर्ति और आत्मविश्वास से भर जाते हैं। युवाओं को उन्होंने शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाने, मैदान में जाकर खेलने, कसरत करने को कहा ताकि वह स्वस्थ शरीर से धर्मग्रंथों में बताए आदर्शों के समान आचरण कर सकें। युवा स्वामीजी के विश्वविख्यात व्याख्यानों को पढ़ते या सुनते तो हैं किंतु उसका अपने जीवन में समुचित ढ़ंग से पालन नहीं करते। यदि युवा स्वामीजी के नैतिक विचारों को अपने जीवन में अपनाएँ तो वे अपने व्यक्तित्व का विकास और उत्तम चरित्र का निर्माण कर सकते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव :

इतिहास पर नजर डालें तो दृष्टिगत होता है कि-चाणक्य ने एक अखण्ड भारत का सपना देखा था जिसे वह चन्द्रगुप्त जैसे युवा के माध्यम से ही साकार कर सका था। वर्तमान समय में उचित मार्गदर्शन के अभाव में भारतीय युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित है और कुप्रवृत्तियों की पगडंडियों में भटककर अपराध और आतंकवाद के मार्ग पर चल रही है। वर्तमान शिक्षा युवाओं में नैतिक मूल्यों का विकास करने में असफल सिद्ध हो रही है। शिक्षा एक व्यवसाय नहीं वरन् संस्कार है। परंतु आज की शिक्षा में सामाजिक व नैतिक मूल्यों का अभाव होने के कारण वह न

तो उपयोगी प्रतीत होती है और न ही युवा वर्ग इसमें कोई खास रूचि लेता है। यह ठीक है कि युवापीढ़ी ही विरोध कर देश में सही चीजों को लागू करवाने का माद्दा रखती है लेकिन युवा पीढ़ी को राष्ट्र प्रेम भी सीखना होगा। उन्हें तो अपने दिग्भ्रमित साथियों को समाज की मुख्यधाारा से जुड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। अत: यह जरूरी है कि हम युवाओं को उचित मार्गदर्शन प्रदान करें जिससे कि उनमें नैतिक मूल्यों का विकास हो क्योंकि आदर्श नेतृत्व ही युवाओं को सही दिशा दिखा सकता है। आज के युग में युवाओं को चाहिए कि वे स्वामीजी के उपदेशों उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करें जिससे कि युवावस्था में अपने देश तथा परिवार के प्रति जिम्मेदारियों का निर्वाहन कर पाने में सक्षम बन सकें ।

स्वामीजी ने सदैव सत्य, साहस, वीरता, प्रकृति प्रेम, राष्ट्र प्रेम, सदाचार इत्यादि को मानव व्यक्तित्व के लिए अत्यंत अनिवार्य माना। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान समाज के मुख्य जीवन–मूल्यों का मूल्यांकन करते हुए इस प्रकार के उपायों पर विचार हो कि स्वामीजी द्वारा प्रतिपादित मूल्यों को युवाओं के व्यक्तित्व में किस प्रकार समाहित किया जाए। अत: जरूरत है आज के समाज को विवेकानंद के बताए मार्गों को अपनाने की ताकि एक सुसंस्कृत समाज की स्थापना हो सके और हमारे जीवन मूल्यों में सही बदलाव आ सके।

ग्रंथ सूची :

पोतदार, वसंत (2012) योद्धा सन्यासी विवेकानंद, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली – 110002

याज्ञिक, विरेन्द्र (2012) 1000 स्वामी विवेकानंद प्रश्नोत्तरी, सत्साहित्य प्रकाशन, 205बी चावड़ी बाजार, दिल्ली–110006

शंकर (2012) विवेकानंद एक खोज, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

श्याम सुंदर (मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी) साहित्य अमृत मासिक पत्रिका, स्वामी विवेकानंद महाविशेषांक

स्वामी विवेकानंद (1993) सार्वलौकिक नीति तथा सदाचार, स्वामी व्योमरूपानन्द, रामकृष्ण मठ, धन्तोली नागपुर – 440012

स्वामी विवेकानंद, कर्मयोग, रामकृष्ण मठ

रोमा रोलां, विवेकानंद की जीवनी, अद्वैत आश्रम

अनुवादक– डॉ० रघूराज गुप्त

हिमांशु शेखर, मेरे सपनों का भारत

सालुंखे, संदीप कुमार (2012) उठो! जगो! आगे बढ़ो!, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

Abhedananda Swami (1977). *Great Saviours of the World.* Ramkrishna Vedanta Math. Calcutta.

Advaita Ashram (1966). *The Message of Swami Vivekananda*. Calcutta.

Complete Works of Swami Vivekananda, Vols I and II, Mayavati Memorial Edition, 11th Edition, Advaita Ashrama, 5, Delhi Entally Road, Calcutta – 14.